वैन्कूवर, कनाडा
फरवरी १८, २००६

सन्देश संख्या १६१

अमेरिका : स्वतंत्रता और विकास की भूमि या परतंत्रता और विनाश की भूमि?

क्रियायोग के पुरुष सिंह की सम्मानजनक संज्ञा से विभूषित विश्वविख्यात योगी श्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय के प्रपौत्र शिवेन्दु के शरीर से सम्भवतः अब मेधावान अमेरिकी लोगों को क्रियायोग द्वारा प्रतिक्रिया शून्य मुक्ति का मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं हो सकेगा । अतः मन के लिए प्रीतिकर तथा छद्म मधुर बोली बोलकर तथाकथित क्रियायोग की मंडी चलाने वाले पाखंडियों को इस बात की खुशी होगी कि अब वे क्रियायोग के नाम पर मंदबुद्धि लोगों को नितांत मनगढ़ंत काल्पनिक एवं लुभावनी कथा–कहानियाँ सुनाकर मानसिक विभ्रमों में उलझाये रखकर बिना किसी भय, बाधा और अवरोध के अपना धंधा सरलतापूर्वक चला सकेंगे । लेकिन क्यों? क्यों कि,

अपनी २०वें वर्ष की अमेरिका–यात्रा के दौरान अमेरिका स्थित सिएटल में वहाँ के क्रियावानों के साथ क्रिया–ऊर्जा की सहभागिता एवं तत्पश्चात् कनाडा के बैंकूवर में वहाँ के भक्तों के साथ क्रिया–ऊर्जा की मंगलमयी साझेदारी संपन्न करने के पश्चात् शिवेन्दु का पुनः सड़क मार्ग से अमेरिका के लिए लौटना हो रहा था । तब सीमा पर निरंकुश अहंकार दबंगई का अप्रत्याशित उपद्रव देखने को मिला था । इस संदर्भ में १० फरवरी और १६ फरवरी को शिवेन्दु के साथ जो कुछ भी अशोभन घटित हुआ उसकी एक झलक वहाँ के क्रियावान संयोजक के अग्रलिखित तीन संवादों में देखी जा सकती है, जिन्हें इस संदेश के अंत में संलग्न किया गया है ।

१६ फरवरी की शाम की साढ़े तीन घंटे की भयंकर यातना के तुरंत बाद एक भीमकाय और दबंग किस्म का पुलिस अधिकारी अशितापूर्वक चिल्लाते हुए शिवेन्दु से कहा–''अच्छा, तो तुम एक पवित्र व्यक्ति हो ! अमेरिकावासियों को तुम्हारे दर्शन के लिए एक सौ डॉलर देने होंगे? बोलो, हाँ या नहीं ?''

शिवेन्दु : ''मैं नहीं जानता''?

दबंग : ''बोलो, हाँ या नहीं''?

तब शिवेन्दु ने सहसा शेर की तरह दहाड़ा–'हाँ' या 'ना' में उत्तर देना, क्यों जरूरी है? परस्पर विरुद्ध मानसिक उपनिवेश में रहना जरूरी है क्या? मैं किसी तीसरे आयाम में क्यों नहीं रह सकता? और मैं यही क्यों नहीं कह सकता कि मैं नहीं जानता ।'' उसके बाद उस दबंग ने शिवेन्दु को मुक्त कर दिया ।

(नोट : अमेरिका के विभिन्न प्रान्तों के क्रिया–संयोजकों ने गुरुजी के कार्यक्रम में भाग लेने वालों को प्रति व्यक्ति सौ डॉलर देने का सुझाव दिया था, जो एच्छिक था, अनिवार्य नहीं । यह राशि विविध स्थानों पर संपन्न होने वाले कार्यक्रमों की व्यवस्था, ठहरने और आने–जाने के खर्च के भुगतान के लिए खर्च होनी थी)

दबंग द्वारा मुक्त करने के पूर्व शिवेन्दु को पूरे घटना–क्रम के विषय में स्वेच्छा से कुछ वक्तव्य देने को कहा गया । दिया गया वक्तव्य थाः–

(१) प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रत्येक काम किसी न किसी प्रयोजन से करता है, जबकि यह व्यक्ति अपना सब कार्य बिना किसी प्रयोजन के करता है । परन्तु कोई इसे समझता नहीं है ।

(२) मैं इस देश से और यहाँ के लोगों से प्रेम करता हूँ । कोई देश जब समृद्ध होता है तब वह अध्यात्म की ओर झुकता है । यहाँ के लोगों में विभेदकारी अहंकार में डूबने के अतिरिक्त गहन समझदारी में उतरने की महान सम्भावनायें हैं ।

(३) यदि आप मुझे अमेरिका में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं तो यह अच्छा है । और अनुमति नहीं देते है, तो भी मेरे लिए अच्छा ही है ।

यह पृथ्वी सब की है, अतः अमेरिका और इस पृथ्वी के अन्य सभी कुशाग्र–बुद्धि क्रियावानों की जय ।

अनुलग्नक – 'जो पासालाका' के तीन संवाद हैं –

अनुलग्नक – १

प्रेषक –
जोसेफ पासालाका
1709, 18 वाँ एवेन्यु, # ३०१, सिएटल, डब्लू ए 98122,
(206) 3999747, joepass@global.t-bird.edu

अत्यावश्यक

सेवा में,

सिनेटर पैटी मरे
2988 जैकसन फेडेरल बिल्डिंग,
915, 2nd एवेन्यु, सिएटल, वाशिंगटन– 98174
फोन : ;(206) 553-5545,, फैक्स : (206) 553-0891

11 फरवरी 2009

प्रिय सेनेटर मरे,

पिछली संध्या, ब्रेनी, वाशिंगटन (पोर्ट कोड 3004) में पैशिफिक हाइवे बॉर्डर क्रॉसिंग पर भारत के एक प्रज्ञापुरुष को अमेरिका इमिग्रेशन सर्विस (आप्रवासन सेवा) द्वारा दुराग्रहपूर्वक अमेरिका में पुनः प्रवेश नहीं करने दिया गया । ये मेरे जैसे अन्य तमाम लोगों की सहायता से सम्पूर्ण नॉर्थ अमेरिका में वहाँ के लोगों को भारतीय दर्शन से परिचित कराने हेतु भारत से यहाँ आये हैं। इनका पहला पड़ाव 4 फरवरी को बैंकूवर (बी सी) में था।

सीमा प्रवेश के दौरान स्पष्टतः नस्लवाद आधारित पूर्वाग्रह के कारण उनके आगे के कार्यक्रमों को बाधित किया जा रहा है। लॉस ऐन्जिल्स, मिशिगन, वाशिंगटन डीसी और न्यूयॉर्क में अनेक छात्र उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहें हैं । कार्यक्रम के संयोजकों ने पहले ही उनके आगमन हेतु फीस, होटल, विभिन्न सुविधाओं के किराये के रूप में हजारों का भुगतान कर चुके हैं । उनको दो सप्ताह बाद मिशिगन में एक शादी–समारोह में भी भाग लेना है ।

उनके भ्रमण का विस्तृत विवरण इस साइट पर उपलब्ध है :
www.kriyayogalahiri.com/htmluk/program.html.

प्रवेश की अनुमति नहीं दिए जाने पर मैंने इमिग्रेशन कार्यालय के पिछले हिस्से से कार्यालय में जाकर पर्यवेक्षक से इस सम्बन्ध में पूछताछ की । पर्यवेक्षक का व्यवहार निपट अशिष्ट और अपमानजनक था । यह घटना 10 फरवरी, मंगलवार, संध्या लगभग 6.00 बजे की है । मुझे जानकारी मिली है कि पर्यवेक्षक तथा उसके सहयोगियों ने उन्हें और लोगों से अलग ले जाकर उनके यात्रा–बैग से कार्यक्रम सम्बन्धित वह सम्पूर्ण सूचना–पत्र निकाल लिया था जिसमें शुल्क भुगतान को दर्शाया गया था । उन भारतीय नागरिक के बार–बार यह बताने पर भी कि वह फीस स्थानीय संयोजकों को दिया गया है ताकि वे यात्रा एवं उसकी व्यवस्था के खर्च का भुगतान कर सके, परन्तु उस मदांध अधिकारी ने कुछ भी सुनने से इनकार कर दिया । श्री शिवेन्दु लाहिड़ी किसी से मिलने के लिए किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लेते हैं । वे एक साधारण व्यक्ति हैं । हमलोग उन्हें समय–समय पर आध्यात्मिक दर्शन पर वार्ता एवं कार्यशाला हेतु आमंत्रित करते हैं ।

उनके सम्बन्ध में जानकारी इस प्रकार हैं :

भारतीय पासपोर्ट :

पासपोर्ट	:	FXXXXXXX
टाइप	:	P
देश	:	IND
नाम	:	लाहिड़ी शिबेन्दु
जन्म स्थान	:	वाराणसी, यू.पी., भारत
निर्गत स्थान	:	पेरिस, फ्रांस (भारतीय दूतावास)
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
लिङ्ग	:	पुरुष
निर्गत तिथि	:	17 मार्च 2008
समाप्ति तिथि	:	16 मार्च 2018

नीचे दिया गया उनका अमेरिका में प्रवेश का 'विजा' उनके पहले के पासपोर्ट (#E5681328) के साथ संलग्न है । इस पुराने पासपोर्ट के स्थान पर अब नया ऊपर उल्लिखित पासपोर्ट निर्गत किया गया है चूँकि श्री लाहिड़ी पूरे विश्व में सदैव घूमते रहते हैं, इसीलिए वह बहुत सारे स्टाम्प एवं विजा से भर गया था ।

अमरीकी विजा का विवरण :–

विजा #	:	FXXXXXXX
टाइप #	:	XXXXXXXX
नाम	:	शिबेन्दु लाहिड़ी
विजा टाइप/क्लास	:	वाराणसी, यू.पी., भारत

निर्गत स्थान : नई दिल्ली, भारत
निर्गत तिथि : 14 मार्च 2008
समाप्ति तिथि : 9 जनवरी 2018

अमेरिकी इमिग्रेशन अधिकारियों ने श्री लाहिड़ी का फोटो तथा उनकी अँगुलियों का छाप लिया है और उन्हें धमकी दी है कि उनका विजा रद्द कर दिया जाएगा ।

मैं पुनः आपका ध्यान ऊपर उल्लिखित वेबसाइट की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जिसमें आप उनके अमेरिका–भ्रमण का यथार्थ देख सकते हैं। वे यहाँ 2007 में भी आए थे और उस समय ऐसी कोई समस्या नहीं हुई थी। हमलोगों में से प्रत्येक संयोजक स्थानीय खर्चों के लिए उत्तरदायी होता है किन्तु उनके अमेरिका आने–जाने की हवाई–यात्रा सम्बन्धी खर्च और अमेरिका में विभिन्न स्थानों के लिए उनके आवागमन का खर्च, हम सभी संयोजक मिलकर करते है।

यदि उन्हें शीघ्र ही अमेरिका प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई तो यहाँ के संयोजकों को हजारों डॉलर का व्यर्थ नुकसान होगा क्योंकि कार्यक्रम की तैयारी एवं व्यवस्था के क्रम में अग्रिम शुल्क का भुगतान पहले ही किया जा चुका है । इसके अतिरिक्त श्री लाहिड़ी को सुनने के लिए दूर से आनेवाले व्यक्तियों के टिकट आदि के रुपये भी व्यर्थ हो जायेंगे ।

श्री लाहिड़ी अमेरिका १९८९ से आ रहे हैं और वे छोटे–छोटे समूहों को सम्बोधित करते हैं । उनके वर्तमान अमेरिका–भ्रमण के संयोजक के रूप में मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इसमें आप हस्तक्षेप करें ताकि श्री लाहिड़ी को अमेरिका में प्रवेश मिल सके और उनकी यात्रा जारी रह सके । यदि इस सप्ताह के अन्त में लॉस ऐन्जिल्स में होने वाला कार्यक्रम छूट भी जाय तो बाद में मिशिगन, वाशिंगटन डीसी और न्यूयार्क में होने वाले कार्यक्रम नहीं छूटने चाहिए अन्यथा वहाँ के लोगों को भी आर्थिक क्षति होगी ।

मैं किसी के लिए भी तथा कभी भी 2063999747 पर उपलब्ध हूँ । इस महत्वपूर्ण एवं अत्यावश्यक विषय पर आपकी सहायता के लिए मैं अग्रिम धन्यवाद प्रेषित करता हूँ ।

आपका विश्वासी
जो पासालाका
सिएटल निवासी तथा
श्री लाहिड़ी के अमेरिकी यात्रा का संयोजक

अनुलग्नक – 2
मित्रो,

लगभग 3 घंटे पहले, मैंने गुरूजी को कोक्वीटलम, ब्रिटिह कोलम्बिया, कनाडा में रहने वो श्रद्धावान परमा और रचना मिश्र की जोड़ी की देख–रेख में छोड़ा है । 10:30 बजे अमेरिकी इमिग्रेशन कार्यालय में गुरूजी के साथ की गयी असह्य यातना के समाप्त होने के बाद हमलोग कनाडा लौटे । गुरूजी के अमेरिकी विजा को तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया गया है । गुरूजी अनिश्चित काल तक अब अमेरिका में प्रवेश नहीं कर पायेंगे ।

जब मैं कनाडा से सिएटल गाड़ी चलाकर आया था तब मेरे साथ कोई नहीं था जिसके साथ मैं इस मानसिक यातना को साझा कर सकूँ । उस मानसिक यातना से गुजरने का मैं साक्षी हूँ । मुझे अभी ही, उस भयंकर अनुभव पर विचार करने तथा उससे जो समझ में आया उसे साझा करने का समय मिला है । एक व्यक्ति के रूप में गुरूजी के साथ साढ़े तीन घंटे तक जो किया गया, वह असह्य था । मैं वहाँ बैठा हुआ उनके साथ लगातार हो रहे सत्ता–मद की उद्दंडता तथा बल–प्रयोग को केवल देखता रहा और कुछ भी नहीं कर सका । 70 वर्ष के उस 'युवा' शरीर के साथ वह दुर्व्यवहार एक दुःस्वप्न के समान था । हालाँकि यह कहा जा सकता है शिवेन्दु के शरीर ने उस दुर्व्यवहार को जितनी सरलता से लिया उतनी सरलता से बगल के कमरे में बैठा हुआ 40 वर्ष का मेरा शरीर नहीं ले सका ।

ऐसा लगता है कि अभी अमेरिका में मन का उपद्रव इतना ज्यादा है कि 'निर्मना' में स्थित व्यक्ति की उपस्थिति मात्र से उसका प्रबल अहंकार इस कदर उग्र हो उठा कि मानवता और करुणा कहीं अंधेरे में खो गयीं ।

इस घटना से मुझे याद आ रही है कि अमेरिकी संविधान के प्रथम संशोधन के तहत जो ''अधिकारों का विधेयक'' पारित किया गया था, उसमें प्रावधान था कि ''कांग्रेस किसी धार्मिक संस्था के सम्बन्ध में, या उसके मुक्त कार्यकलापों पर रोक लगाने के सम्बन्ध में; या बोलने या प्रेस की स्वतन्त्रता को कम करने के सम्बन्ध में, या लोगों के शान्तिपूर्वक एकत्रित होने के अधिकार के सम्बन्ध में और शिकायतों को दूर करने के लिए सरकार के पास आवेदन देने के सम्बन्ध में कोई भी कानून नहीं बनाएगी ।''

मैं आस्वथ हो गया हूँ कि सम्प्रति इस संशोधन का एक भी अंश, या एक भी शब्द सत्य नहीं है । केवल एक शब्द ही नहीं; बल्कि इसे सम्पूर्ण रूप से उलट दिया गया है ।

हमलोग अब यहाँ से कहाँ जायेंगे ?

- इसी सप्ताह गुरूजी के लिए पेरिस लौटने के लिए टिकट की व्यवस्था करनी होगी ।
- ब्रैण्डन, राजेश, थीएरी (और कुछ हद तक जुआन कार्लोस आर जो) को इस जख्म पर मलहम लगाना होगा तथा गुरूजी की यात्रा के अचानक इस तरह समाप्त हो जाने की स्थिति का सामना करना होगा ।
- कुमकुम को किसी तरह वह पैसा वापस लौटना चाहिए जिससे गुरूजी यहाँ आये थे (और अब आधा व्यर्थ हो चुका है)।
- गोपी एवं भारत के अन्य मित्रों को किताबों के पैसे बाद में कभी वापस किए जाने चाहिए ।
- भावी क्रियावानों को दीक्षा हेतु विदेश जाने के लिए सोचना पड़ेगा।
- मैं अपने वकील से इस सम्बन्ध में सलाह करूँगा ताकि दूरस्थ भविष्य के लिए कुछ समाधान निकल सके ।

कई लोग क्रिया–दीक्षा से वंचित रह जायेंगे – वह सोचकर मैं बहुत उदास हूँ ।

फिर भी, साहस को डिगा देने वाले इस दुःख में, आशा की छोटी–सी किरण भी दिखाई पड़ती है । 19 वर्षों तक गुरुजी आए और गए । कोई समस्या नहीं हुई । अब 20वें वर्ष में उन्हें रोक दिया गया है । इसलिए १९ वर्षों की मित्रता, सत्य एवं सौन्दर्य का उत्सव मनाया जाय । और हमलोग भविष्य की दिशा को बदलने की प्रतिज्ञा भी करें कि न केवल गुरूजी को किसी दिन पुनः अमेरिका आने की अनुमति मिले बल्कि हम अपने चारों और दूसरे क्रियावानों को जागृत करें, क्रिया–ऊर्जा का प्रसार करें ताकि हमारे देश ने विनाश की जो दिशा पकड़ ली है, उसे धीरे–धीरे एवं धैर्य से सही दिशा दी जा सके । हमलोग किस प्रकार अपने देश को वांछित दिशा में जाने दे सकते हैं?

आज रात्रि अब मुझे सोने जाना होगा (2:45 AM PST) किन्तु मुझे आशा है कि कल तुमलोग समझदारी की ऊर्जा के प्रसार के लिए आपस में हाथ मिलाओगे और भविष्य की दिशा तय करोगे ।

अत्यन्त खेद और दुःख के साथ

जो पासालाका (सिएटल)

अनुलग्नक – ३

उनसे कहना है कि भारतीय दर्शन के एक महान गुरू को अमेरिका के डिपार्टमेण्ट ऑफ होमलैंड (आई.एन.) सेक्युरिटी के धार्मिक पूर्वाग्रहों के कारण अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली । उनलोगों ने अब अध्यात्म से जुड़े किसी भी व्यक्ति के लिए अमेरिका में प्रवेश असम्भव बना दिया है । उनसे यह भी कहना कि डिपार्टमेण्ट ऑफ होमलैण्ड सेक्युरिटी (सीबीपी) ने 70 वर्ष के शिबेन्दु जी की साढ़े तीन घंटे तक इस तरह से पूछ–ताछ की मानों वे कोई अपराधी हों । और यह भी कहना कि अमरीकी सरकार ने अब योग को शारीरिक–कसरत–कार्यक्रम के रूप में मान्यता दे दी है किन्तु इसमें किसी भी तरह का अध्यात्म नहीं है । अतः वहाँ हठयोग ने बाजी जीत ली है ।

अपने लोगों का ध्यान रखना । राजेश आर थीएरी अपने–अपने लोगों का ध्यान रखेंगे । लॉस ऐन्जीलस में जुआन कार्लोस ने पहले ही ध्यान देना शुरू कर दिया है ।

अब मैं कुछ विश्राम करने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि कुछ देर लोगों के काम आ सकूँ। मुझे तुम्हारे समय के अनुसार 3-4 बजे के बाद जग जाना चाहिए

जो पासालाका ।